देखने वाली आँखें...!

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र

आमतौर पर कइयों के मुख से सुनने में आता है कि दृष्टि चंचल होती है, दृष्टि खराब होती है, इसपर हमें समझने की ज़रुरत है कि कैसे ये मैकेनिज़म काम करता है। कई बार हम कहते हैं कि दृष्टि हमें धोखा देती है और क्रिमिनल आई हो जाती है। दृष्टि पवित्र होने के बदले अपवित्र हो जाती है। हमें यह सोचने की ज़रुरत है कि हमारी ये दृष्टि या हमारी ये आँखें स्वयं में न खराब हैं, न अच्छी हैं, ये तो साधन है।

हमारी अच्छी दृष्टि या बुरी दृष्टि हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। हमारी मंसा पर निर्भर करती है। दृष्टि का आधार है दृष्टिकोण। अगर हम दृष्टिकोण का परिवर्तन नहीं करेंगे तो दृष्टि भी परिवर्तित नहीं होगी। आँखें तो देखने का एक माध्यम है, जैसे कैमरे में लेन्स होता है। मन की जो वृत्ति है, वो आधारित है हमारे दृष्टिकोण पर, क्योंकि वृत्ति बनती ही है दृष्टिकोण से। हमारा दृष्टिकोण 'आउट लुक' पर निर्भर है। हमारा 'इन लुक' अंतर्दृष्टि पर निर्भर है। अर्थात् हमारे मन में क्या भरा हुआ है उस पर। क्या हम आशावादी हैं या निराशावादी हैं? सकारात्मक सोचते हैं या नकारात्मक सोचते हैं? यह जो हमारी सोचने की विधि या प्रक्रिया है, उसे ही दृष्टिकोण कहा जाता है। इस पर दृष्टि निर्भर करती है। आप जितना भी सुन लिजिए, जितनी भी कोशिश कीजिए, आपकी दृष्टि तब तक ठीक नहीं होगी, जब तक आपका दृष्टिकोण ठीक नहीं होगा। आप देखते होंगे, पहले के ज़माने में कभी लोग सुंदर चेहरे के लिए चाँद का मिसाल दिया करते थे। अपनी प्रियतमा के लिए कहते थे कि उसका मुखरा चाँद जैसा सुंदर है। अब वे ऐसा क्यों कहते थे? अब जब मनुष्य चाँद पर जाकर उतरा, उसने देखा कि वहाँ तो बहुत गड्ढे हैं, रेत ही रेत है। अब चाँद के बारे में जिसने इस बात को जाना, तो वो यही समझेगा कि कवि, नारी की महिमा करने के बदले उसका अपमान कर रहा है, क्योंकि चाँद में तो गड्ढे हैं, खराबी है। यह खराबी हमें दूर से दिखाई नहीं देती। वहाँ से जो फोटो लेकर आये हैं, उनको आप देखेंगे तो पता पड़ेगा कि चाँद तो भद्दी चीज़ है।

जिन्होंने जीवशास्त्र पढ़ा है, इंसान के चेहरे को माइक्रोस्कोप से देखा है, उन्हें पता है कि हमारे रोम, जिनसे पसीना निकलता है, वहाँ गड्ढे ही गड्ढे हैं। जिसको हम सुंदर चेहरा समझते हैं, वो किससे भरा होगा, वह किटाणुओं से भरा पड़ा है। शरीर के अंदर कीड़े, रोगाणु और गंदगी भरी पड़ी है। लेकिन यह तो चमड़ी रूपी अच्छे प्लास्टिक से ढ़का हुआ है इसलिए हमें आसानी से मालूम नहीं पड़ता। बाथरूम में जाते हैं, तो जो कुछ होता है वो तो शरीर में ही है। कचरेदान में जो कचरा डालते हैं, थूकदान में जो कुछ आप थूकते हैं, वो सब किसमें है? संसार की कौन सी गंदगी जो इसमें नहीं है? लेकिन यह सब कचरा, गंदगी, एक अच्छे से, रंगीन प्लास्टिक से ढ़का हुआ है। जिस व्यक्ति का दृष्टिकोण है कि यह शरीर बाहर से देखने में सुंदर है, लेकिन अंदर क्या है? क्या उसको शरीर के प्रति आकर्षण होगा, कभी नहीं। इसलिए दृष्टि तब तक नहीं बदलेगी, जब तक दृष्टिकोण नहीं बदलेगा।

जो कुछ भी हम बाहर से देखते हैं, वह संदेश के रूप में हमारे मन में आता है। छः फुट के आदमी को हमने देखा, यह पुरुष है या स्त्री है, वह हमारे सामने आया। आँखें तो हमारी छोटी सी हैं, लेकिन आदमी छः फुट का है।

फिर हमने उसको देखा कैसे? हमारे मस्तिष्क पर उसका बहुत छोटा सा प्रतिबिम्ब पड़ता है। उसका रंग क्या है, रूप क्या है, चेहरे का लक्षण क्या है, उसकी बनावट क्या है, उसकी आकृति प्रकृति कैसी है - यह चित्र चित्रित होता है। संदेश मस्तिष्क को पहुँचने के बाद आत्मा इन सबका विशलेषण करती है कि क्या है और क्या नहीं है। यह जो विशलेषण की अवस्था है, इसे हम विशलेषण की प्रक्रिया कहते हैं। जब तक यह परिवर्तित नहीं होगी, तब तक दृष्टि परिवर्तित नहीं हो सकती। बाहर से जो संदेश आया, उसको उद्दीपन(स्टीम्युलस) कहते हैं, यह पहुँचने के बाद वहाँ से प्रतिक्रिया आती है कि यह छः फुट का मनुष्य है, पुरुष है या स्त्री है। यह फलाने जगह का रहने वाला है या वाली है। इसको मैंने कई साल पहले देखा था, इसका नाम यह है। उसको ये सारा रिकॉर्ड खोलकर चित्रित करता है। उस आदमी का नाम या सारा परिचय तो उसके चेहरे पर नहीं लिखा रहता, मन के अंदर या आत्मा के अदंर जो सारा रिकॉर्ड है, उसकी तुलना करके आत्मा उसको पहचानने की कोशिश करती है। अंदर की जो प्रतिक्रिया है, प्रत्युत्तर है, बाहर का जो उद्दीपन है, उसकी प्रतिक्रिया या प्रत्युत्तर है - वह कैसे बदले? यह प्रतिक्रिया किस पर निर्भर है? अंतर्दृष्टि (इन लुक) पर। जब तक मनुष्य की अंतर्दृष्टि नहीं बदलेगी, तब तक बाहर की दृष्टि नहीं बदलेगी।

अब वो बदलेगी कैसे? तो इसके लिए हमें सही सही चीज़, जो है, जैसी है, वैसे ही रूप का हमें सत्य ज्ञान होना ज़रूरी है और साथ साथ हमें निष्पक्ष होकर उसे उसी रूप से देखने का दृष्टिकोण बनाना पड़े। ये कैसे डेवलप किया जा सकता है? कोई, जो हमें सम्पूर्ण सत्य रूप से जानता हो, समझता हो, वही तो बता सकेगा। इसलिए कहा जाता है 'सत्यम शिवम सुंदरम'। वे ही अगर हमें बतायें कि ये कुदरत का खेल कैसे चलता है, वे हमें ज्ञान दें, हमें पढ़ायें, समझायें, सिखायें, तभी तो हमारी अंतरचेतना में वो सत्य चीज़ बढ़ेगी, अर्थात् वो समझ पैदा होगी, जिससे कि हमारे देखने का तरीका बदलेगा, अर्थात् हमारा दृष्टिकोण बदलेगा, हमारी मंसा बदलेगी, तब इन नेत्र रूपी लेन्स से जो हम हैं, वही तो देखेंगे, जैसे कम्प्युटर में प्रोग्राम डाला जाता है, और कम्प्युटर उसी प्रोग्राम के अनुसार चीज़ हमारे सामने लाता है। जब परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान बुद्धि में भरता जाता है, धारण होता जाता है, तब हमारा दृष्टिकोण बदलता है और तब ही दृष्टि भी बदलती है। क्योंकि दृष्टिकोण से पहला परिवर्तन होता है वृत्ति में, फिर वृत्ति से बदलती है स्मृति और स्थिति। इससे फिर हमारी दृष्टि जो है, वो स्वयं बदल जाती है। अगर हम चाहते हैं कि हम अखंड पवित्रता का पालना करें, पवित्रता रूपी जो श्रेष्ठ खज़ाना है, परमात्मा द्वारा दिया हुआ जो वरदान है, उसको किसी भी रीति से ना गंवायें, वो सदा बना रहे, इसके लिए हमारी दृष्टि ठीक रहे। तो सबसे पहले अपने सोचने की प्रक्रिया को ध्यान पूर्वक देखें, ऑब्ज़र्व करें कि यह कहीं मैंने सुना हुआ, पढ़ा हुआ या पुरानी मान्यताओं के आधार से ही तो मैं नहीं चल रहा हूँ, कहीं मैं इसी आधार पर तो नहीं सोच रहा हूँ! अब हमें ये तो मालूम हुआ है कि हम वास्तव में शरीर को चलाने वाली एक चैतन्य सत्ता आत्मा हैं। तो चैतन्य सत्ता जो है, जैसी है उसे जानें, और उसको जो मूलतः चाहिए वही सोच हमें पैदा करनी है। तो आज से हम इसपर विचार करेंगे और अपने सोचने की प्रक्रिया का आरंभ उस आत्मा को केन्द्रबिन्दु रख ही करें। आत्मा को चाहिए ही क्या? शांति, खुशी, आनंद, ज्ञान, शक्ति और पवित्रता। उसी के इर्द-गिर्द अपनी सोच प्रणाली का हम सृजन करेंगे या क्रियेट करेंगे तो हम अपने दृष्टिकोण को भी वास्तविकता के अनुरूप बना पायेंगे। जब हमारे दृष्टिकोण में वो चीज़ आयेगी, तब हमारी दृष्टि में भी परिवर्तन होगा।

दिल्ली। भारत के गृहमंत्री राजनाथ सिंह का गुलदस्ता भेंट कर सम्मान करते हुए ब्र.कु.राधा,लखनऊ, ब्र.कु. रोहित,गुज. तथा ब्र.कु. हुसैन,ओ.आर.सी.।

नेपाल। विजयदशमी एवं चैतन्य दुर्गा झाँकी के अनावरण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय रक्षामंत्री भिमसेनदास प्रधान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. राज बहन। साथ हैं ब्र.कु. रामसिंह।

हापुर-उ.प्र.। एडमिनिस्ट्रेटिव विंग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सांसद राजेन्द्र अग्रवाल, विधायक विजय पाल आधति, एस.डी.एम. डॉ. श्रीवास्तव, ब्र.कु. कमल, ब्र.कु. ज्योति तथा ब्र.कु. स्वर्णा।

दिल्ली-मेहरौली। 'सेल्फ गवर्नेन्स फॉर गुड गवर्नेन्स कैम्पेन' के कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए टीबी एण्ड रेस्पीरेट्री डिज़ीज़ हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. रोहित सरीन, सी.एम.ओ. डॉ. प्रवेश यादव, डॉ. एम.डी. गुप्ता, ब्र.कु. अनीता तथा अन्य।

गया-बिहार। 'तनाव मुक्ति योग शिविर' में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. शीला, समाजसेवी प्रदीप जैन, सीविल कोर्ट बार एसोसिएशन के प्रेसीडेंट ओम प्रकाश तथा ब्र.कु. लक्ष्मी।

दिल्ली-लाजपत-नगर। नवरात्रि के शुभ अवसर पर पूर्व काउन्सलर सुभाष मल्होत्रा तथा सहयोगियों को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. चंदर बहन।